ISBN: 978-81-974088-0-9

9. कार्यस्थल पर दिव्यांगता: समस्याएँ एवं समाधान

कुमारी विद्याभूषण

सहायक प्रोफेसर,

क्रुति इंस्टिट्यूट ऑफ टीचर एजुकेशन,

नरदहा, रायपुर.

प्रस्तावना:

दिव्यांगता विशेष रूप से भारत जैसे विकासशील देश में एक गंभीर सार्वजनिक स्वास्थ्य समस्या है। दिव्यांगता के प्रति संवेदनशीलता बढ़ाने के लिये संयुक्त राष्ट्र द्वारा 3 दिसंबर को विश्व दिव्यांग दिवस के रूप में घोषित किया गया है। यह राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक आदि जैसे जीवन के हर पहलू में दिव्यांग व्यक्तियों के अधिकारों तथा उनके हितों को प्रोत्साहित करने की परिकल्पना करता है।

दिव्यांगता की स्थिति:

आबादी का एक बड़ा अनुपात:

दिव्यांग लोगों की आबादी को विश्व के सबसे बड़े गैर-मान्यता प्राप्त अल्पसंख्यक समूह के रूप में देखा जाता है।

वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार, भारत में दिव्यांग लोगों की आबादी लगभग 26.8 मिलियन थी, जो देश की कुल आबादी 2.21% है।

राजनीतिक प्रतिनिधित्व का अभाव:

भारत में दिव्यांग व्यक्तियों की व्यापक आबादी होने के बावजूद स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद पिछले लगभग 7 दशकों में मात्र 4 संसद सदस्य और 6 राज्य विधानसभा सदस्य ही ऐसे रहे हैं जो प्रत्यक्ष रूप से दिव्यांगता से पीड़ित हैं।

अतिरिक्त बाधाएँ:

भारत में दिव्यांग लोगों के सामाजिक और आर्थिक विकास की चुनौतियों से प्रभावित होने की संभावनाएँ भी अधिक हैं। चौंकाने वाली बात यह है कि इस आबादी के 45% लोग निरक्षर हैं, जो उनके लिये बेहतर और अधिक सुविधा-संपन्न जीवन के निर्माण प्रक्रिया को मुश्किल बनाता है!

चुनौतियां:

संस्थागत अड़चनें:

वर्तमान में भी देश में दिव्यांगता के संदर्भ में जागरूकता, देखभाल, अच्छी और सुलभ चिकित्सा सुविधाओं की भारी कमी बनी हुई है। इसके अतिरिक्त पुनर्वास सेवाओं की पहुँच, उपलब्धता और सदुपयोग में भी कमी देखी गई है।

ये कारक दिव्यांग लोगों के लिये निवारक और उपचारात्मक ढाँचा सुनिश्चित करने में बाधक बने हुए हैं।

शिथिल कार्यान्वयन:

सरकार द्वारा दिव्यांग व्यक्तियों की स्थिति में सुधार के लिये कई सराहनीय पहलों की शुरुआत की गई है।

इसी प्रकार '**दिव्यांगजन अधिकार अधिनियम, 2016**' के तहत सरकारी नौकरियों और उच्च शिक्षा संस्थानों में दिव्यांग व्यक्तियों के लिये आरक्षण का प्रावधान किया गया है!

दिव्यांग लोगों के सामाजिक संबंधों और सामाजिक भागीदारी पर प्रभाव:

दिव्यांग वृद्धों को सामाजिक अलगाव का अधिक जोखिम होता है, यह एक ऐसी समस्या है जो आबादी की उम्र बढ़ने के साथ और भी बदतर हो सकती है। विकलांग लोगों को घर में सबसे अधिक कठिनाई का सामना करना पड़ता है।

समाजिक पूर्वाग्रहों के कारण दिव्यांग व्यक्तियों को बहुत अधिक भेदभाव का सामना करना पड़ता है। भेदभाव का सबसे मार्मिक क्षेत्र, "**शिक्षा**" है। दिव्यांगता अक्सर ला-इलाज होती है, हालांकि शुरुआती पहचान और हस्तक्षेप से कुशल प्रबंधन आसान हो जाता है, परिणाम स्वरूप स्थिति में अतिरिक्त दुष्प्रभाव को रोका जा सकता है।

भारत में विकलांग बच्चों को उनके जीवन के कई आयामों में कई तरह की वंचनाओं और सीमित अवसरों का सामना करना पड़ता है। उनके परिवार और देखभाल करने वाले भी घर पर विकलांग व्यक्ति होने के कारण बहुत तनाव और चुनौतियों से गुजरते हैं, जिसके कारण अंततः इन बच्चों के प्रति गंभीर भेदभावपूर्ण व्यवहार होता है।

विकलांग व्यक्तियों को अक्सर कलंक का सामना करना पड़ता है। लोग अक्सर विकलांगों की उपस्थिति पर **डर, दया, संरक्षण, घुसपैठिया नज़र, घृणा या उपेक्षा** के साथ प्रतिक्रिया करते हैं। ये प्रतिक्रियाएँ, और अक्सर, विकलांग व्यक्तियों को सामाजिक स्थानों तक पहुँचने से वंचित कर सकती हैं, साथ ही इन स्थानों द्वारा प्रदान किए जाने वाले लाभों और संसाधनों से भी वंचित करती हैं।

समस्याएं:

आंकड़ों पर नजर डालें तो इनमें से 80 करोड़ दिव्यांक की उम्र काम करने की है। मगर अपनी दिव्यांकता के कारण अक्सर उन्हें रोजगार पाने में अनेक अवरोधों का सामना करना पड़ता है। एक अनुमान के अनुसार, दुनिया भर में विकलांग बच्चों का यह आंकड़ा 24 करोड़ के करीब है।

इतना ही नहीं स्वास्थ्य की खराब परिस्थितियों के चलते दिव्यांक में दमा, मधुमेह, स्ट्रोक या अवसाद जैसे विकारों के विकसित होने का जोखिम सामान्य लोगों से दोगुना ज्यादा होता है। ऐसे में स्वास्थ्य क्षेत्र में उनके लिए भी समावेशन, सुलभता और बिना किसी भेदभाव के सुविधाओं की उपलब्धता को ध्यान में रखना होगा।

देखा जाए तो इन देशों में जो मौजूदा स्वास्थ्य प्रणालियों हैं उनमें विकलांग लोगों कई बार नकारात्मक रवैयों व बर्ताव का सामना करना पड़ता है।

इसमें स्वास्थ्य देखभाल प्रदान करने वालों का बर्ताव सदैव अच्छा नहीं होता। शिक्षा का आभाव व पूर्ण जानकारी न मिलना या फिर स्वास्थ्य सम्बन्धी जानकारी इस तरह दिया जाना जो इन लोगों की समझ में न आए वो भी एक बड़ी समस्या है। इतना ही नहीं परिवहन, धन आभाव व पहुंच के कारण होने वाली दिक्कतों के चलते यह लोग स्वास्थ्य केंद्रों तक पहुंचने में अनगिनत कठिनाइयों का सामना करते हैं।

निष्कर्ष:

दिव्यांक के कारण बच्चों के पोषण, स्वास्थ्य, शिक्षा पर असर होता है, और उनके शोषण व हिंसा का शिकार होने का खतरा बढ़ जाता है। पता चला है कि विकासशील देशों में 90 फीसदी विकलांग बच्चे, स्कूली शिक्षा से वंचित हैं।दुनिया भर में लगभग 180-220 मिलियन युवा दिव्यांकता के साथ जी रहे हैं, जिनमें से 80% विकासशील देशों में रहते हैं, इसलिए उनके पास शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा और रोजगार तक पहुँच नहीं है। [1] दिव्यांकता में शारीरिक, मानसिक या मानसिक बीमारी शामिल है। कई युवा स्वस्थ और स्थिर जीवन जीते हैं, हालाँकि शारीरिक कमज़ोरी और सामाजिक अक्षमता के कारण दिव्यांक लोगों को बिना दिव्यांक लोगों की तुलना में अधिक बाधाएँ हो सकती हैं।

संदर्भित ग्रंथ:

1. ग्लोबल रिपोर्ट ऑन हेल्थ फॉर पर्सन विद डिसैबिलिटीज
2. वेगा, यूजेनियो (2022) पेस्ट सिग्लो का क्रॉनिका। महामारी, निराशा और डिजाइन। मैड्रिड, एक्सपेरीमेंटा लिब्रोस। आईएसबीएन 978-84-18049-73-6
3. विलियमसन, बेस (2019) । सुलभ अमेरिका। विकलांगता और डिजाइन का इतिहास। न्यूयॉर्क यूनिवर्सिटी प्रेस। आईएसबीएन 978-1-4798024-94